ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 18 अंक 27 कुल पृष्ठ-8 22 से 28 दिसम्बर, 2022 दयानन्दाब्द 198 सृष्टि सम्वत् 1960853123 सम्वत् 2079 मा. कृ.-07

दयानन्द बाल सदन, अजमेर में अमर शहीद राम प्रसाद बिस्मिल बलिदान दिवस समारोह का भव्य आयोजन

सत्यार्थप्रकाश पढ़कर बिस्मिल स्वतंत्रता आन्दोलन में कूद पड़ा – स्वामी आर्यवेश

दयानन्द बाल सदन एक ऐतिहासिक संस्था है – बिरजानन्द एडवोकेट

दयानन्द बाल सदन में मेरा पूरा जीवन बीता है – ओम प्रकाश वर्मा

महान चिन्तक एवं आर्य समाज के पुरोधा स्व. डॉ. दत्तात्रेय बावले द्वारा स्थापित दयानन्द बाल सदन में आर्य समाज की ओर से उसकी स्थापना के एक वर्ष पश्चात् 19 दिसम्बर, 2022 को अमर शहीद राम प्रसाद बिस्मिल बलिदान दिवस का भव्य समारोह आयोजित किया गया। समारोह में आर्य समाज के शीर्षस्थ संन्यासी तथा दयानन्द बाल सदन के संरक्षक स्वामी आर्यवेश जी, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री बिरजानन्द एडवोकेट जी, सभा के मंत्री श्री कमलेश शर्मा जी, आर्य वीरदल के अधीष्ठाता श्री भंवरलाल आर्य जी, आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान के उपप्रधान सर नारायण सिंह आर्य, श्री भंवर लाल हठवाल, सभा के उपमंत्री श्री हरदेव सिंह आर्य, आर्य समाज शिवगंज के प्रधान श्री मदन आर्य, आर्य वीरदल के प्रान्तीय महासचिव श्री जितेन्द्र सिंह आर्य (जोधपुर), श्री उम्मेद सिंह आर्य (जोधपुर), श्री मोतीलाल आर्य प्रधान आर्य समाज आबूरोड, श्री महिपाल सिंह आर्य प्रधान आर्य समाज सैक्टर–14, सोनीपत आदि के अतिरिक्त श्री रामचन्द्र आर्य भजनोपदेशक, श्री वीर प्रभाकर शास्त्री हरिद्वार, श्री राजू विद्यार्थी आदि ने भी अपनी गरिमामयी उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी ने अपने ओजस्वी उद्बोधन में देश के महान क्रांतिकारी अमर शहीद रामप्रसाद बिस्मिल उनके अनन्य साथियों में अशफाक उल्ला खाँ, ठाकुर रोशन सिंह व राजेन्द्र सिंह लाहिड़ी आदि को स्मरण करते हुए उनके जीवन की प्रेरणादायक घटनाओं पर प्रकाश डाला। स्वामी जी ने कहा कि देश की आजादी के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनुयायियों एवं आर्य समाज के हजारों कार्यकर्ताओं ने जेलें काटी तथा अनेकों ने अपने जीवन की आहुति देकर गुलामी की बेड़ियों को काटने में ऐतिहासिक भूमिका निभाई। महर्षि दयानन्द सरस्वती के शिष्यों में अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द, श्याम जी कृष्ण वर्मा, भाई परमानन्द, लाला लाजपत राय, शहीदे आजम भगत सिंह व उनका पूरा परिवार, राम प्रसाद बिस्मिल व उनके साथी आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। स्वामी आर्यवेश जी ने आर्यजनों का आह्वान किया कि आगामी वर्ष 2024 में पूरे विश्व में महर्षि दयानन्द सरस्वती की दूसरी जन्मशती मनाई जायेगी। इस महापर्व को दृष्टिगत रखते हुए हम सभी को दिन–रात एक करके महर्षि दयानन्द के व्यक्तित्व व कृतित्व तथा आर्य समाज की उपलब्धियों को जन–जन तक पहुंचाने का अभियान चलाना चाहिए। आर्य समाज का प्रत्येक कार्यकर्ता अपने क्षेत्र के सभी स्कूलों, कॉलेजों, गली–मोहल्लों एवं पार्कों में जाकर ऋषि का संदेश लोगों को बतायें। इसके लिए यह आवश्यक होगा कि जो भी कार्यक्रम आयोजित किये जायें उन्हें स्थानीय पत्र–पत्रिकाओं में, सोशल मीडिया के वाट्सएप, फेसबुक आदि माध्यमों से अधिक से अधिक प्रचारित व प्रसारित करें। ऋषि दयानन्द जी की विचारधारा पर स्थान–स्थान पर विचार गोष्ठियों का आयोजन तथा साहित्य वितरण आदि का कार्य भी अत्यन्त प्रभावशाली रहेगा। वर्ष 2024 में स्थान–स्थान पर जन–चेतना यात्राएँ, शोभा यात्राएँ व प्रभात फेरियाँ निकालकर आर्य समाज और महर्षि दयानन्द जी के विचारों को जन–जन तक पहुंचाया जाये। आदिवासी एवं दलित समाज को आर्य समाज से जोड़ने के लिए बड़े–बड़े यज्ञों के द्वारा उन्हें ससम्मान कार्यक्रमों में आमंत्रित करके प्रीतिभोज व मिलन समारोह किये जायें। लाखों युवक–युवतियों को आर्य समाज का सदस्य बनाया जाये। भले ही उनसे प्रतीक रूप में सामान्य शुल्क लेकर फार्म भरवाये जायें और उसके बदले उन्हें छोटे–छोटे ट्रैक्ट देकर आकृष्ट किया जाये। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के महत्त्व एवं उपयोगिता पर राष्ट्रीय चैनलों व समाचार पत्रों में बहस छेड़ी जाये। नशामुक्त भारत, जातिवाद मुक्त भारत, धार्मिक अन्धविश्वास व पाखण्ड मुक्त भारत, महिला उत्पीड़न मुक्त भारत, साम्प्रदायिकता मुक्त भारत, भ्रष्टाचार मुक्त भारत एवं शोषण मुक्त भारत की महत्त्वाकांक्षी परिकल्पना एवं योजना को मूर्त रूप देने के लिए पूरे देश में सप्तक्रांति के इन बिन्दुओं पर आर्य समाज की ओर से प्रचण्ड अभियान चलाया जाये। मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम व योगेश्वर श्रीकृष्ण वैदिक संस्कृति के प्रकाश पुंज हैं। उनके व्यक्तित्व को ईश्वर के अवतार के बजाय महान परम्पराओं एवं आदर्शों के संवाहक एवं पुरोधा के रूप में लोगों के बीच में रखा जाये। स्वामी आर्यवेश जी ने महर्षि दयानन्द जी की दूसरी जन्मशती को भव्य तरीके से मनाने की योजना देकर कहा कि हम सबके लिए यह एक महान पर्व के रूप में मनाने का अवसर होगा और इसके माध्यम से आर्य समाज अपने भविष्य की क्रांतिकारी योजना तैयार कर सकेगा।

दयानन्द बाल सदन के प्रधान श्री ओम प्रकाश वर्मा ने आये हुए अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि मेरा पूरा जीवन इस बाल सदन में बीता है। अतः मैं इस संस्था से दिल से जुड़ा हुआ हूँ। इस संस्था से अनेक प्रतिभाएँ निकली और उन्होंने देश के विभिन्न पदों पर रहकर अपने दायित्व को कुशलता के साथ निभाया।

इस कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री बिरजानन्द एडवोकेट जी ने आर्य समाज दयानन्द बाल सदन की स्थापना के एक वर्ष पूरे होने पर आर्य समाज के पदाधिकारियों को बधाई देते हुए कहा कि बाल सदन एक ऐतिहासिक संस्था है और यहां आर्य समाज की इकाई पिछले वर्ष बनाई गई थी। जिसने एक वर्ष में कई महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम आयोजित करके अपनी सक्रियता का परिचय दिया है। अतः सभी आर्य समाजों को इस आर्य समाज से प्रेरणा लेनी चाहिए।

शेष पृष्ठ 5 पर

युवा पीढ़ी का दायित्व

—पं० शिवदयालु

भौतिक सुख समृद्धि में आकण्ठ डूबा पाश्चात्य जगत् आज अपनी मायावी सभ्यता के भार से स्वयं टूट रहा है। यूरोप हो या अमेरिका युवा पीढ़ी का मानस विक्षोभ और विद्रोह ग्रस्त है। तड़क भड़क पूर्ण परिधानों में लिपटे बदन आज प्रायः नग्न होने तथा मूल्यवान् वस्त्रों के स्थान पर मोटे, झोटे कपड़ों में तन ढाकने में ही सन्तोष की अनुभूति करने लगे हैं। गगन चुम्बी वातानुकूलित अट्टालिकाएं आज उनके मन में वितृष्णा जगा रही हैं और हिमाच्छादित शैल शिखरों के प्रति उनकी कशिश बढ़ती जा रही है। टेम्स, वोल्गा और मिसीसिपी की लहरों की अपेक्षा गंगा यमुना की नीलधारा ही उनके मन में अधिक आकर्षण जगा रही है। तात्पर्य यह है कि वैभव और विलास का केन्द्र बनी पाश्चात्य नगरियों से युवा पीढ़ी भारत की ओर भागना चाहती है, भाग रही है। उसके मन में भारत दर्शन की लालसा, भारतीय युवकों के मन में जगी विदेश दर्शन की इच्छा की तुलना में कहीं अधिक तीव्र हो उठी है। और उसका परिणाम ही है हिमालय की उपत्यकाओं और शिखरों में स्थित नगरियों की सड़क पर भटकती गौरांग युवा पीढ़ी। युवक और युवतियां। सुशिक्षित किन्तु अपनी वेशभूषा से ही उखड़े से लगने वाले।

एक प्रश्न चिन्ह !

इस स्थिति में यह प्रश्न उठना स्वाभाविक ही है कि आज जो भारत अपनी आध्यात्मिक ज्ञान की थाती के कारण विश्व भर की जिज्ञासु युवा पीढ़ी के आकर्षण का केन्द्र बिन्दु बन रहा है, उस महान् पुण्यभूमि की गोदी में जन्मी, पली और बढ़ी युवा पीढ़ी क्या जगत् को दिशादान देगी अथवा स्वयं भी उस रपटीली राह पर ही पग बढ़ाएगी, जिससे आज पाश्चात्य युवक लौट रहा है। क्या उस सभ्यता की उतरन को ग्रहण करेगी जिसे यूरोप ने त्यागा है। इस प्रश्न का उत्तर देना तो सरल नहीं। किन्तु यह बात निश्चयपूर्वक कही जा सकती है कि यदि युवा पीढ़ी अपने पूर्वजों के सत्य इतिहास, स्वदेश के प्रति गौरव एवं वैदिक ज्ञान गरिमा से संपृक्त हो सकी तो वह मनु के इस उद्घोष को चरितार्थ कर सकेगी—

एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः।।

हाँ, उसे इस ओर प्रवृत्त करने का दायित्व है उन जगदेखे जीवनों का जो युवा मनःस्थिति में आए बिखराव से चिंतित तो है, भटकाव से दुःखी तो है, किन्तु युवकों पर अपने जीवन के अनुभवों की थाती को लुटाते, जिन्हें संकोच सताता है। आज कई बृद्धजन युवा पीढ़ी के विरुद्ध नास्तिक हो जाने का फतवा भी अचानक दे बैठते हैं और स्वकर्त्तव्य की इतना कह देने मात्र में ही इतिश्री मान बैठते हैं। यह वयोवृद्ध पीढ़ी युवक वर्ग को तभी सन्मार्ग दिखा सकती है, जब इस तथ्य को हृदयंगम करले कि 'ईश्वर में विश्वास न करने वाला जितना नास्तिक है, उससे बड़ा नास्तिक वह कि जो स्वयं में विश्वास नहीं रखता।' और इस दृष्टि से हर निराश मन में यह भाव जाग सकता है कि युवा पीढ़ी का मन बिखराव से ग्रस्त भले ही हो किन्तु उसे नास्तिक की संज्ञा देना यदि पूर्णरूपेण नहीं तो बड़ी सीमा तक तो निश्चित रूप से ही गलत होगा।

आदर्श आवश्यक और.....

किन्तु जहां वृद्धजनों का एक दायित्व है, वहां युवा पीढ़ी का भी यह पावन कर्त्तव्य है कि वह अपनी भटकन को स्वयं ही मिटाने की आस्था अपने मानस में जगाए और यह तभी संभव है जब वह एक आदर्श को समक्ष रखकर कर्त्तव्य पथ पर आरूढ़ हो। क्योंकि उसे स्मरण रखना होगा कि आदर्श विहीन मनुष्य ५० हजार गलतियाँ करेगा तो किसी आदर्श को समक्ष रखकर चलने वाला हजार ही।

युवा पीढ़ी को स्वसाहस को भी जगाना होगा। आज आर्थिक विपन्नता के इस युग में उसे अपने समक्ष समस्याओं का जो महासागर लहराता दिखाई दे रहा है, उसे पार करने के लिए उसे महावीर हनुमान, के सागरोल्लंघन का आख्यान तथा श्रीकृष्ण के महान अभियान एवं देव दयानन्द के दिग्विजय अनुष्ठान के उदाहरण अपने समक्ष रखने होंगे। उन्हें समझना होगा कि यदि वे नाना प्रलोभनों के बावजूद सत्य पर आरूढ़ रहे तो उन्हें ऐसी महान् शक्ति प्राप्त होगी जिसके समक्ष लोग ऐसी कोई बात कहते हुए भी डरेंगे जिसे वह सत्य नहीं समझते। किन्तु इस स्थिति में आने के लिए उन्हें कपट और प्रपंचों से अपने हृदय मंदिर को सर्वथा स्वच्छ रखना होगा।

आदर्श कौन हो?

वस्तुतः आज की स्थिति में प्रत्येक युवक को हनुमान के जीवन को अपना आदर्श बनाना होगा। उसे स्मरण रखना होगा कि हनुमान ने किस प्रकार श्रीराम की आज्ञा प्राप्त होते ही महोदधि की उत्ताल तरंगों को भी चुनौती देने का साहस अपने हृदय में संजोया था। उन्हें याद रखना होगा कि हनुमान को अपने लक्ष्य की पूर्ति में इसीलिए सफलता मिली थी कि वे जहां अद्भुत प्रतिभा के धनी थे, वहां सम्पूर्ण रूपेण इन्द्रियजित् भी। आज के आर्य युवक को अपना जीवन समर्पण के उसी महान् आदर्श पर खड़ा करना होगा, क्योंकि उसके माध्यम से ही क्रमशः अन्य समग्र आदर्श जीवन में प्रकाशित होंगे। गुरु आज्ञा का सर्वतोभावेन पालन और अटूट ब्रह्मचर्य यही है सफलता की कुंजी।

आत्म संयम का विकास हो !

आत्म संयम का विकास भी युवा पीढ़ी में होना नितांत आवश्यक है, क्योंकि संयमीजन किसी भी बाह्य वस्तु से प्रभावित नहीं हो सकते। असंयत और निरंकुश मन मानव को अधोगामी बनाकर उसके विनाश का पथ प्रशस्त करता है तो संयत मन सही अर्थों में रक्षक और प्रेरक है। आत्म संयम का विकास जीवन में गंभीरता और बालतुल्य सरलता के पारस्परिक योग पर निर्भर है। महर्षि दयानन्द ने मतान्धता से मुक्ति का जो आह्वान किया था वह भी इसकी उपलब्धि में सहायक है।

ऐसे विचारों से स्वयं को बचाना भी आवश्यक है जो आत्मा की पावनता, शुचिता और शक्ति को संकुचित कर देते हैं। उन्हें ही कुविचार की संज्ञा दी जाती है। इनके स्थान पर अपने मन को ऐसे कार्यों की ओर लगाना ही जीवन को साफल्य मंडित बनाने का मर्म है जो आत्मा की अभिव्यक्ति में सहायक है।

प्रत्येक युवक को स्मरण रहे.....

वर्तमान परिस्थितियों में स्वदायित्व की पूर्ति के इच्छुक प्रत्येक युवक को यह स्मरण रखना चाहिए कि अर्थहीन विषयों पर छिड़ी पुरानी लड़ाइयों को त्याग देना ही युग की मांग है। प्रत्येक भारतीय युवक को यह स्मरण रखना चाहिए कि अनेक शताब्दियों तक भारत के दासता की शृंखला में आबद्ध रहने के कारण जहां अन्य कई होंगे वहाँ एक बड़ा कारण यह भी रहा कि पुष्ट मस्तिष्क वाले सैंकड़ों व्यक्ति इसी प्रकार के विषयों को लेकर वर्षों तक तर्क वितर्क में उलझते रहे थे कि लोटा भरकर पानी दाएं हाथ से दिया, जाए अथवा बाएं हाथ से। हाथ तीन बार धोए जाएं अथवा चार बार। कुल्ला पाँच बार करना उचित है या छः बार। ऐसे व्यर्थ के प्रश्नों के लिए तर्क वितर्क में ही जीवन बिता देने वाले और ऐसे विषयों पर नितांत गवेषणापूर्ण दर्शन की रचना कर डालने वाले पंडितों से कोई मार्ग दर्शन न मिल सकेगा।

महान् बनें किन्तु....

युवा पीढ़ी को इस सत्य का सदैव स्मरण रखना होगा कि त्याग के बिना कोई भी महान् कार्य सिद्ध नहीं हो सकता। इस जगत् को दिशा दान देने के लिए भारतीय युवा पीढ़ी को नाम—यश, ऐश्वर्य और हास विलास ही नहीं अपितु जीवन के समर्पण की भी सिद्धता करनी होगी।

उन्हें इस आह्वान का स्मरण रखना होगा।
जीवन कर्म सहज भीषण है।
उसका सब सुख केवल क्षण है।
यद्यपि लक्ष्य अदृश्य धूमिल है।
फिर भी वीर हृदय ! हलचल है।
अंधकार को चीर अभय हो—
बढ़ो साहसी ! जग विजयी हो।

यही आकांक्षा उन्हें पाश्चात्य युवा पीढ़ी के मार्गदर्शन में सफलता प्रदान करेगी।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
द्वारा प्रकाशित
'दैनिक यज्ञ पद्धति'

आर्यजनों की भारी माँग पर आर्य समाजों के साप्ताहिक सत्संगों तथा विशिष्ट बृहद्यज्ञों की सामान्य यज्ञ पद्धति (महर्षि दयानन्द जी द्वारा प्रणीत पंच महायज्ञ सहित) इस पुस्तक में समाहित की गई है। इसके अतिरिक्त विशेष मन्त्र, विशेष प्रार्थनाएँ तथा भजन संग्रह का भी समावेश इस महत्त्वपूर्ण पुस्तक में किया गया है। यज्ञ की यह पुस्तक अत्यन्त आकर्षक तथा सुन्दर टाईटल के साथ बढ़िया कागज के ऊपर छपकर तैयार है। 50 पृष्ठों तथा 23X36 के 16वें साईज की इस पुस्तक का मूल्य 18/ रुपये रखा गया है। लेकिन 100 पुस्तक लेने पर मात्र 1000/— रुपये में उपलब्ध कराई जा रही है। डाक व्यय अतिरिक्त देय होगा।

प्राप्ति स्थान — सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,
''महर्षि दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली—2
दूरभाष :—011—23274771, 011—42415359
मो.:—8218863689

प्रखर राष्ट्रभक्त लाला लाजपतराय

—डॉ० भाई महावीर

इस युग में देश की श्रद्धा–विभोर जनता ने दो महामानवों को पंजाब केसरी की उपाधि से अलंकृत किया है। उनमें से प्रथम थे महाराजा रणजीत सिंह। १८ दिसम्बर १८४५ को जन्म हुआ मुन्शी राधा किशन का जिन की प्रथम सन्तान के रूप में पंजाब को अपना दूसरा केसरी प्राप्त हुआ। अपने देश व धर्म के लिए जिस प्रकार का स्वाभिमान, अपने हिन्दूपन के लिए जितनी तड़प और उसका अपमान अथवा हानि होते देखकर जितनी तीव्र प्रतिक्रिया लाला लाजपतराय में जीवन भर होती रही, उसे देखकर यह आश्चर्यजनक लगता है कि उनके पिता अपनी आधी उम्र तक केवल नाम के हिन्दू थे– नहीं तो रमजान के दिनों में रोजे रखने में, हर रोज पांच बार नमाज पढ़ने में और कुरान आदि मुस्लिम ग्रन्थों के पारायण में शायद ही कोई मुसलमान उनसे बाजी ले पाता। यह उनके उस्ताद का प्रभाव था, जिसके परिणाम स्वरूप उनके अनेक सहपाठी विधिवत् इस्लाम स्वीकार कर चुके थे।

मुस्लिम संस्कृति में पोषित पिता

मुन्शी राधा किशन कलमा पढ़ कर बाकायदा मुसलमान नहीं बने इसका श्रेय बहुत अंश में उनकी पत्नी गुलाब देवी को ही है। मुन्शी जी ने अपने मुसलमान मित्रों को घर पर बुलाकर उनकी इच्छानुसार कई बार मांसादि का भोजन करवाया और कभी–कभी उनके यहां से पका हुआ भोजन लाकर खाया, यह सब उनके जैन मत, अग्रवाल वैश्य के लिए कितना सह्य था यह तो अलग प्रश्न है। किन्तु इसने उस साध्वी नारी के जीवन को अत्यन्त दुःखित बना रखा था और कई–कई दिन तक उसने गम के सिवा कुछ न खाकर और आँसू पीकर काटे थे। गोद के शिशु पर उसने अपनी ममता भी उँडेली और उसी पर अपनी सारी आशाएँ भी केन्द्रित कीं। परन्तु सारी व्यथा सहकर भी कभी उसने उन्हें छोड़ जाने की कल्पना को पास तक नहीं आने दिया।

इस्लाम की दीक्षा?

एक बार तो मुन्शी जी ने इस्लाम की दीक्षा लेने का फैसला कर ही डाला और पत्नी व बालक को लेकर मस्जिद में जा पहुँचे। परन्तु सती नारी के अन्तर्मन की पीड़ा उसकी आंखों की मूक वाणी से कुछ ऐसी प्रकट हुई कि बाहर सीढ़ियों पर ही बाल लाजपत चीख कर रोने लग पड़ा। बस, इस रुदन से मुन्शी राधा किशन के दुर्बल मन का अस्थिर निश्चय डगमगा गया और वे लौट आए। आगे चलकर लाला जी ने शुद्धि का जो कार्य करना था उसका भी श्रीगणेश, जैसे साक्षात् अपने पिता से शैशवावस्था में ही उन्होंने कर दिया। परन्तु माता के दुःख और पिता के व्यामोह को दूर करने में अभी उन्हें बहुत देर लगने वाली थी।

विद्यार्थी जीवन

लाला लाजपत राय को पढ़ने की लगन पिता से विरासत में मिली परन्तु गरीबी के कारण उनका विधिवत् शिक्षण न हो पाया। जहाँ–जहाँ उनके पिता अध्यापक रहे प्रायः उन्हीं स्कूलों में वे पढ़े। शिक्षा काल में ही वे दो–तीन बार लाहौर आए तो उन्हें दो साथी मिले– गुरुदत्त और हंसराज। कुछ समय पूर्व ही वहां आर्य समाज की स्थापना हो चुकी थी और वे दोनों उस रंग में रंगे हुए थे। इस मैत्री से और इसके द्वारा आर्य समाज के जो संस्कार लाजपतराय को मिले उनसे उन्हें देश जाति की सेवा का संकल्प प्राप्त हुआ। हंसराज में जो सरल सेवा की वृत्ति थी, गुरुदत्त में जो बौद्धिक प्रतिभा थी और लाजपत राय में जो उग्र देश–प्रेम और करुणा का सागर था उनके मिश्रण से यह त्रिमूर्ति आर्य समाज की नींव बन गई। गुरुदत्त तो अकाल मृत्यु के ग्रास बने परन्तु लाला लाजपत राय और महात्मा हंसराज की मैत्री आजीवन रही।

समाज सेवा

लाजपतराय अत्यन्त भावुक प्रकृति के थे। स्वभाव की भावना प्रधानता के कारण उन्हें जहां कहीं कष्ट दिखाई पड़ा– चाहे वह राजपूताना का अकाल था, चाहे कांगड़ा का भूकम्प, वहीं पहुँचे और जन–जन के कष्ट को कम करने में जुटे। पैसा उन्होंने कमाया पर उसमें मन न लगाया, उसे जीवन पूर्ति का प्रमुख कार्य नहीं बनाया। यही नहीं, उन्होंने अन्याय के विरुद्ध सदा आवाज उठाई। कौन कितना बड़ा है इसकी परवाह किए बगैर उन्होंने अन्यायपूर्ण बात का विरोध किया।

मुस्लिम कांग्रेस-अध्यक्ष को उत्तर

ऐसा ही एक प्रसंग था जब १६२३ में काकीनाडा कांग्रेस के अध्यक्षपद से मौलाना मुहम्मद अली ने कहा था कि हिन्दू अपनी अछूत जाति की समस्या हल नहीं कर सकते इसलिए क्यों न उन्हें आधा–आधा बाँट लिया जाये, आधे अछूत मुसलमानों को दे दिए जाएं। यह तर्क जितना लचर और निर्लज्ज था उतना ही हिन्दू भावना पर चोट करने वाला भी था। बाकी लोग भले ही इस अपमान को पी सके परन्तु लाला जी की प्रतिक्रिया बहुत तीव्र थी– यह हमारा घरेलू प्रश्न है किसी और के दखल की इसमें जरूरत नहीं। हिन्दू ही छुआछूत की समस्या का हल करेंगे। फिर अछूत जातियाँ क्या ढोर पशु हैं जिनके इस तरह बंटवारे की बात की जा रही है?

हिन्दू भाव उनके हृदय में क्यों रहता था? इसका उत्तर उन्हीं के शब्दों में यह है– "यदि स्वराज्य लेने के लिए हमारी आतुरता हमें धर्म बदलने की प्रेरणा दे और हम ईसाई बनें तो यह एक प्रकार की स्वतन्त्रता अंग्रेज हमें देंगे। परन्तु स्वराज्य तो सच्चे अर्थों में तभी होगा जब हम अपने स्वरूप में स्थिर रह कर राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त करें। हमारा स्वरूप है हमारा धर्म, हमारी संस्कृति और हमारी अपनी देशगत, जातिगत भावनाएँ। उन्हें त्याग कर मिलने वाला स्वराज्य, स्वराज्य नहीं है।"

जब वे कांग्रेस में रहे तो ऐसे उत्साह के साथ जो सरल व सच्चे हृदयों में ही हो सकता है और जो हर कदम पर हानि लाभ का विचार करने का अभ्यस्त नहीं होता।वह "आग से खेलता है तो झुलस जाने के लिए तैयार भी रहता है।" और इसमें कोई दो मत नहीं कि ब्रिटिश सरकार के साथ संघर्ष में इन प्रश्नों पर उलझने के अवसर उनके लिए अनेक आए।

राजनैतिक क्षेत्र में पदार्पण से लाला लाजपत राय के जीवन का दूसरा चरण प्रारम्भ होता है। कांग्रेस की स्थापना के समय से ही अलीगढ़ के सर सैयद अहमद ने मुसलमानों को उससे अलग रखने का झंडा उठा लिया था। उनके लेखों के उत्तर में अनेक पत्र उन्हींके पुराने विचारों के हवाले से छपे। चाहे वे पत्र गुमनाम थे परन्तु अधिक दिनतक यह छिपा न रहा कि वे किस लेखनी का प्रसाद थे। उनके कारण लाला जी की जो प्रसिद्धि हुई उसका परिणाम यह था कि कांग्रेस के

संस्थापक श्री ह्यूम और पंडित मालवीय आदि ने प्रयाग कांग्रेस के समय उनका स्वयं स्टेशन पर स्वागत किया और श्री ह्यूम ने उन चिट्ठियों का स्वयं सम्पादन करके पुस्तकार में प्रकाशित किया। लाला जी संभवतः पहले व्यक्ति थे जिन्होंने तब तक अंग्रेजी में काम करने वाली कांग्रेस के अधिवेशन में हिन्दी में भाषण दिया। उनकी असाधारण वक्तृत्व शक्ति ने उन्हें शीघ्र ही संस्था की चोटी के नेताओं की श्रेणी में ला खड़ा किया।

बंग-भंग आन्दोलन में

और तब १८०५ में आया बंग–भंग का वह निर्णय जिसके विरोध में 'लाल–बाल–पाल' की त्रिमूर्ति गरम दल के रूप में देश के उद्गारों का प्रतिनिधित्व करने लगी। प्रिंस आफ वेल्स के स्वागत के प्रश्न पर बनारस अधिवेशन में कांग्रेस के नरम और गरम दलों में टक्कर हो गई। इसके बाद जागृति की जो लहर देश भर में चली वह मीठे–मीठे भाषणों, सरकार के नाम भेजे गए आवेदन पत्रों और 'गॉड सेव दी किंग' के गायन की मर्यादाओं को ध्वस्त करके 'स्वराज्य, स्वदेशी और बहिष्कार' केमंत्रों के रूप में चारों दिशाओं में व्यापक हो गई।इस नए जागरण के निर्माता यदि महाराष्ट्र में लोकमान्य तिलक और इनका 'केसरी' थे तो पंजाब में लाजपत और उनका 'पंजाबी' और बंगाल में विपिन चन्द्र पाल तथा अरविन्द घोष के सम्पादन में चलने वाला 'वन्देमातरम्'। लाला जी की वाणी में ओज तो था ही, अब तो वह आग बरसाने लगी। नौकरशाही इस ताक में रहने लगी कि उनको किस प्रकार रास्ते से हटाए।

तभी पंजाब में नहरी आबादियों के कानून के विरुद्ध आन्दोलन चला। सही या गलत यह धारणा कृषकों में घर कर गई कि अंग्रेज कानून द्वारा उत्तराधिकार के नियम को बदलने की तैयारी में है। लाला जी आन्दोलन के समर्थक तो थे, पर उसमें सक्रिय नहीं हुए। किन्तु न चाहते हुए भी वे खिंच कर उसमें उलझ ही गए। लायलपुर की एक सभा में वे अध्यक्ष बनाए गए। वहीं भगत सिंह के चाचा अजीत सिंहने भाषण दिया जो काफी विद्रोहपूर्ण था।

नरम और गरम दल

अजीत सिंह और लाजपतराय दोनों को १८१८ के पुराने रेगुलेशन के अधीन निर्वासन का दण्ड दिया गया। ६ महीने की कैद के बाद लाला जी मांडले जेल से रिहा होकर लौटे। इस कैद ने उनकी कीर्ति को दिग्दिगन्त तक फैला दिया। उसके शीघ्र बाद ही सूरत कांग्रेस का अधिवेशन था। जनता के हृदयों पर तो लाला जी का शासन था और तिलक भी चाहते थे उन्हीं को अध्यक्ष बनाना परन्तु लाला जी दलबन्दी में पड़ना न चाहते थे। अधिवेशन तो मार पिटाई और उछलते जूतों की गड़बड़ में समाप्त हो गया। साथ ही यह स्पष्ट हो गया कि नरम और गरम दल वालों के रास्ते बिलकुल फट गए हैं। लालाजी ने कांग्रेस को छोड़ा तो नहीं पर विरक्ति उन्हें अवश्य हो गई– कांग्रेस से ही नहीं, राजनीति से। कुछ काल के लिए उन्होंने फिर आर्य समाज के क्षेत्र को अपना लिया। १६१४ में वे इंग्लैण्ड चले गए। वे वहीं थे जब महायुद्ध शुरू हो गया।

युद्ध नीति

अब भारतीयों और कांग्रेस के सामने यह प्रश्न था कि उनकी नीति युद्ध के बारे में क्या हो। गांधी जी बिना किसी शर्त के सरकार की सहायता करने के पक्ष में थे। लालाजी का दृष्टि–कोण क्या था? "मैं युद्ध में अंग्रेजों की सहायता के विरोध का आन्दोलन चलाने के पक्ष में तो नहीं था। मैं तो उनकी युद्ध नीति का समर्थन करने का भी उद्यत था। यदि उससे हमारे युवकों को भी सेना में प्रतिष्ठित पदों की प्राप्ति, शस्त्रास्त्र के प्रयोग तथा युद्धकला में निपुणता प्राप्त करने का अवसर मिल जाता। सरकार ने ये दोनों बातें अस्वीकार कर दीं।.... इस दशा में मैं बिना किसी शर्त के युद्ध में भर्ती होने को तैयार नहीं था। परन्तु मेरे देश के शिक्षित नेताओं का मत इससे भिन्न था। लालाजी व तिलक दोनों का दृष्टि–कोण एक ही था जो कि गांधी जी की तुलना में यथार्थवादी भी था– और जो कम से कम आज तो स्वीकार किया जा सकता है– अधिक दूरदर्शिता–पूर्ण भी! इसी दूरदर्शिता ने लाला जी को, देश लौटने, कहीं नजरबन्द हो जाने के स्थान पर बाहर रहने के लिए प्रेरित किया। वे फरवरी १६२० तक नहीं लौटे।

निरंकुश लाठियाँ

लौटे तो ब्रेडला हाल के पीछे मैदान में उनका पहला भाषण हुआ। उसमें उनकी अंग्रेजों को चुनौती थी– "खिचड़ी पक रही है। न खाएंगे न खाने देंगे। न सोएंगे, न सोने देंगे! मंजिल पर पहुँचे बिना चैन न लेंगे।" और सच में वह महापुरुष न सोया ना उसने प्रतिपक्षी को सोने दिया, जब तक निरंकुश शासकों की लाठियों ने उसे सदा की नींद न सुला दिया। उन लाठियों के विषय में लाला जी के शब्द किसी भी क्रान्ति की चिनगारी से कम ज्वलन्त नहीं थे–

"हम पर की गई एक–एक चोट ब्रिटिश साम्राज्य के कफन में एक–एक कील सिद्ध होगी"

उन्होंने यह भी कहा कि यदि मैं मर गया और जिन नवयुवकों को मैंने काबू में रखा हुआ था, उन्होंने (शांतिपूर्ण उपायों से) अन्य मार्ग ग्रहण करने का निश्चय किया तो मेरी आत्मा उनके कार्य को आशीर्वाद देगी!"

अपने निर्वाण समय के निकट, मद्रास समुद्र तट पर हुई एक विशाल सभा में जो कुछ लाला जी ने कहा वह उनके जीवन भर के भावों को अत्यन्त सुन्दर ढंग से प्रकट करता है–

"अब जब जीवन की संध्या होते देखता हूँ और सिंहावलोकन करता हूँ तो खेद होता है कि जिस माता की कोख से जन्मा, जिसकी गोद को मलमूत्र से अपवित्र किया, जिसका स्तन पिया वह माता बन्धन में ही है और मेरे जीवन के सूर्य का अस्ताचल की ओर प्रयाण तीव्रगति से हो चला है। माता के बंधन तोड़ने के लिए मैंने कुछ नहीं किया, इसी की तीव्र वेदना मुझे व्यथित करती रहती है।"

आज जब माता के बन्धन टूट चुके हैं, लाला लाजपतराय और उनके अन्य साथियों के आदर्श कहां तक पूरे हो रहे हैं? आज की राजनीति की ऊहापोह में मन खोजता है ऐसे साहसी व उदात्त चरित्रों को जिन्होंने आदर्शवाद से प्रेरित होकर जीवन को यज्ञ बनाया हो, जिनके श्वासों में देशप्रेम हो, जिनकी धड़कनों में राष्ट्रकी व्यथा हो। कहाँ हैं ऐसे राजनीतिज्ञ जो स्वयं को उन महापुरुषोंके उत्तराधिकारी कह सकें जिन्होंने पत्थर बनकर स्वातन्त्र्य मंदिर की नींव को भरा था?

आर्य समाज महर्षि दयानन्द धाम बाजार, हंसली, अमृतसर (पंजाब) में 18 दिसम्बर, 2022 को अमर शहीदों की स्मृति में अमृत महोत्सव को समर्पण महोत्सव के रूप में मनाया गया

आजादी की नींव आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द जी ने रखी थी – स्वामी आर्यवेश

आजादी का सही मतलब तभी सिद्ध होगा जब देश से भ्रष्टाचार, नशाखोरी, अन्धविश्वास आदि बुराईयों का अन्त होगा – ओम प्रकाश आर्य

आर्य समाज महर्षि दयानन्द धाम बाजार, हंसली, अमृतसर (पंजाब) में 18 दिसम्बर, 2022 को शहीदों की स्मृति में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामंत्री श्री ओम प्रकाश आर्य जी की अध्यक्षता में आजादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में समर्पण महोत्सव का कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ यज्ञ से प्रारम्भ हुआ। यज्ञ आचार्य दयानन्द शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में प्रारम्भ हुआ। इस यज्ञ में मुख्य यजमान श्री विशाल अग्रवाल व श्रीमती ज्योति अग्रवाल, श्री अश्विनी अग्रवाल आदि ने यज्ञाग्नि में शहीदों के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करते हुए आहुतियाँ प्रदान की। इस कार्यक्रम में दिल्ली से पधारे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नेता स्वामी आर्यवेश जी, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री बिरजानन्द एडवोकेट, श्री जवाहर लाल मेहरा प्रधान आर्य समाज मॉडल टाऊन, श्री इन्द्रपाल आर्य प्रधान आर्य समाज लक्ष्मणसर, श्री कमल पसाहन प्रधान आर्य समाज जंडियाला गुरु, श्री बाल कृष्ण शर्मा चेयरमैन नशा विरोधी संगठन, श्री मुरारी लाल, आर्य समाज पुतलीघर, श्री प्रमोद शर्मा आदि विशेष रूप से उपस्थित हुए। कार्यक्रम में शहीदों की याद में क्रांतिकारी भजन श्री नरेन्द्र पंछी, श्री इन्द्रपाल आर्य व शारदा वाधवा द्वारा प्रस्तुत किये गये।

इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि आजादी की नींव आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने रखी थी। गुलामी की जंजीरों को तोड़ने में आर्य समाज का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। स्वतंत्रता आन्दोलन में क्रांति की ज्वाला धधकाने में महर्षि दयानन्द सरस्वती का महत्त्वपूर्ण स्थान है। स्वामी दयानन्द जी के क्रांतिकारी विचारों से प्रेरित होकर आजादी के दीवानों ने अंग्रेजों के खिलाफ बिगुल बजाया था। आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द जी की विचारधारा एवं आर्य समाज के सिद्धान्तों ने देश में स्वतंत्रता की लौ को तेज करने में

अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। आर्य समाज एवं स्वामी दयानन्द जी से प्रभावित होने वाले क्रांतिकारियों में मुख्य रूप से अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द, लौह पुरुष स्वामी स्वतंत्रानन्द, शेरे पंजाब लाला लाजपत राय, श्यामजी कृष्ण वर्मा, भाई परमानन्द, शहीदे आजम भगत सिंह व उनके दादा सरदार अर्जुन सिंह, अमर शहीद राम प्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खाँ, राजगुरु, सुखदेव, ठाकुर रोशन, राजेन्द्र लाहिड़ी व चन्द्रशेखर आजाद आदि के नाम उल्लेखनीय हैं जिन्होंने आर्य समाज के क्रांतिकारी विचारों से प्रभावित होकर देश को आजाद कराने में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। आज हम सबको यह संकल्प लेने की आवश्यकता है कि आजादी के वीर सपूतों के बलिदान को व्यर्थ न जाने दें। आज पूरे देश में भ्रष्टाचार, नशाखोरी, व्यभिचार, पाखण्ड एवं अन्धविश्वास सहित अनेक कुरीतियों का बोलबाला बढ़ता जा रहा है। इन बुराईयों के खिलाफ आर्य समाज को एकजुट होकर मुकाबला करना होगा। आर्य समाज सदैव से कुरीतियों के खिलाफ जन आन्दोलन चलाकर लोगों को जागरूक करने का कार्य करता रहा है। हम सबको स्वामी दयानन्द जी के विचार एवं आर्य समाज के सिद्धान्त के अनुरूप कार्य करने की आवश्यकता है। आर्य समाज जन–सामान्य की आवाज बने।

अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में श्री ओम प्रकाश आर्य जी ने कहा कि देश की आजादी की प्रथम मांग स्वामी दयानन्द जी द्वारा उठाई गई। महर्षि दयानन्द जी ने पूरे देश में घूम–घूम कर आजादी की चेतना को पैदा किया। उन्होंने लाला लाजपत राय, शहीदे आजम भगत सिंह, पं. राम प्रसाद बिस्मिल सहित अनेक बलिदानियों की फौज तैयार कर दी। आजादी का इतिहास लिखने वालों ने स्पष्ट तौर पर स्वीकार करते हैं कि आजादी के आन्दोलन में 90 प्रतिशत लोग आर्य समाज से सम्बन्धित थे। आजादी के दीवानों का सपना था कि देश आजाद हो जाने के बाद समाज से छुआछूत, गैर–बराबरी आदि बुराईयाँ खत्म होंगी और सभी को समान शिक्षा, समान चिकित्सा प्राप्त होगी जिससे पूरा देश खुशहाल होगा। परन्तु आज आजादी के 75 वर्ष बीत जाने के बाद भी हमारा देश इन कुरीतियों में जकड़ा पड़ा है। पूरे देश में अन्धविश्वास एवं पाखण्ड का बोलबाला बढ़ रहा है। इसलिए हम सबको इन बुराईयों के खिलाफ उठ खड़े होने की आवश्यकता है। हम पूरे पंजाब प्रान्त में स्वामी दयानन्द जी के विचारों एवं आर्य समाज के सिद्धान्तों का प्रचार–प्रसार तेज करने का संकल्प व्यक्त करते हैं। उन्होंने उपस्थित आर्य महानुभावों को प्रेरित करते हुए कहा कि आर्य समाज के माध्यम से लोगों की आवाज बनकर कार्य करने का संकल्प लें।

इस कार्यक्रम का संचालन डॉ. नवीन आर्य जी ने बड़ी कुशलता के साथ किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में जिन महानुभावों ने अपना योगदान दिया उनमें सर्वश्री श्रीमती सुलोचना आर्या, श्री अर्जुन कुमार, श्री पंकज, श्री अशोक वर्मा, श्री राज कुमार, सुनीता, श्री राकेश आर्य, श्रीमती कमलेश रानी, श्री नरेश पसाहन, श्रीमती वंदना पसाहन, श्री मुकेश, मीना, ऊषा बजाज, उमा बजाज, छवि गुप्ता, नीलम, कोमल आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। कार्यक्रम के अन्त में प्रीति भोज की सुन्दर व्यवस्था की गई थी जिसे सभी ने ग्रहण किया।

इस अवसर पर वरिष्ठ व्यक्तित्व युवा प्रतिभा सम्मान आदि से नगर के कई गणमान्य महानुभावों एवं परीक्षाओं में अच्छे अंक प्राप्त करने वाले छात्र–छात्राओं को सम्मानित किया गया। विदित हो कि पिछले दो वर्ष से श्री ओम प्रकाश आर्य के नेतृत्व में गरीब परिवारों को प्रत्येक मास मुफ्त राशन एवं आवश्यक सामग्री वितरित किया जा रही है। जिससे पूरे नगर में आर्य समाज की विशेष प्रशस्ति हो रही है।

श्री बृजेन्द्र भण्डारी के निवास पर रणधीर सिंह नगर, लुधियाना (पंजाब) में स्वामी आर्यवेश जी ने कार्यकर्ताओं की बैठक में भाग लिया

गत् 16 दिसम्बर, 2022 को पंजाब के दौरे पर जाते समय आर्य समाज के यशस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी ने अपने पुराने सहयोगी एवं साथी श्री बृजेन्द्र भण्डारी के निवास पर रणधीर सिंह नगर, लुधियाना में प्रवास किया। उनके साथ राजस्थान सभा के प्रधान श्री बिरजानन्द जी तथा श्री धर्मेन्द्र कुमार भी थे। अपने लुधियाना प्रवास के दौरान स्वामी जी ने लुधियाना के सभी प्रमुख कार्यकर्ताओं को श्री बृजेन्द्र भण्डारी जी के निवास पर आमंत्रित कर आर्य समाज के प्रचार एवं प्रसार पर चर्चा की। उन्होंने वर्ष 2024 में महर्षि दयानन्द सरस्वती की दूसरी जन्मशती को ऐतिहासिक रूप में मनाने के लिए सभी कार्यकर्ताओं को उत्साहित किया और पूरे पंजाब में कार्य की गति बढ़ाने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि लुधियाना आर्य समाज का गढ़ है। यहां अनेक कार्यक्रमों को आयोजित करके पूरे लुधियाना वासियों को महर्षि दयानन्द सरस्वती तथा आर्य समाज की स्वतंत्रता आन्दोलन में एवं समाज सुधार में विशेष भूमिका को बताना चाहिए। इसके लिए विभिन्न कार्यक्रम किये जायें। गली–गली में प्रभात फेरियां निकाली जायें, विचार गोष्ठियों का आयोजन किया जाये। स्थानीय समाचार पत्रों तथा सोशल मीडिया पर महर्षि दयानन्द के विचारों तथा मानवता की सेवा को प्रचारित–प्रसारित करना चाहिए। बैठक में भाग लेने वाले सभी कार्यकर्ताओं ने स्वामी जी का हार्दिक स्वागत करते हुए आश्वस्त किया कि आर्य समाज के प्रचार–प्रसार में वे तन–मन–धन से जुटेंगे और महर्षि की दूसरी जन्मशती को एक भव्य कार्यक्रम के रूप में मनायेंगे।

श्री बृजेन्द्र भण्डारी ने सभी के जलपान तथा बाद में भोजन की भी व्यवस्था भी अपने निवास पर की थी। उन्होंने आगन्तुक सभी कार्यकर्ताओं का धन्यवाद भी ज्ञापित किया और स्वामी जी के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए कहा कि स्वामी जी के आज हमारे निवास पर पधारने पर यहां इतने कार्यकर्ता एकत्रित हुए यह हमारे लिए सौभाग्य की बात है। स्वामी जी ने भी सभी का धन्यवाद किया।

गुरुकुल गौतमनगर, दिल्ली का 43 वाँ चतुर्वेद पारायण महायज्ञ सम्पन्न

युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश, श्री रामपाल शास्त्री एवं श्री दिलीप शास्त्री का हुआ सम्मान

आर्या के तीर्थ स्थल श्रीमद्दयानन्द वेदार्ष महाविद्यालय न्यास गुरुकुल गौतम नगर, दिल्ली में अनेक गुरुकुलों के संस्थापक व संचालक आर्ष परम्परा के पोषक वीतराग वरिष्ठ आर्य संन्यासी पूज्य स्वामी प्रणवानन्द जी महाराज के सानिध्य में आयोजित 43वाँ चतुर्वेद ब्रह्मपारायण महायज्ञ भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ।

इस चतुर्वेद ब्रह्मपारायण महायज्ञ की पूर्णाहुति के अवसर पर 10 व 11 दिसम्बर, 2022 को सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के प्रधान तेजस्वी युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी, मानव सेवा प्रतिष्ठान के संस्थापक व कार्यकर्ता प्रधान श्री रामपाल शास्त्री, भीलवाड़ा राजस्थान में आर्य प्रचारक गुरुकुल गौतम नगर दिल्ली के स्नातक श्री दिलीप जी शास्त्री को क्रमशः पण्डित क्षीतीश वेदालंकार स्वामी सच्चिदानंद जी योगी व पण्डित मनोहर विद्यालंकार की स्मृति में श्रीमद्दयानन्द वेदार्ष महाविद्यालय न्यास गुरुकुल गौतम नगर, दिल्ली के महामन्त्री कैप्टन रुद्रसेन जी आर्य रोहतक, स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती श्री विनय आदित्य जी (स्व. पं. क्षितीश वेदालंकार के सुपुत्र) आदि के करकमलों से अभिनंदित किया गया। सम्मानित होने वालों को स्मृति चिन्ह, शॉल, साहित्य तथा सम्मान राशि देकर सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर स्वामी देवव्रत जी सरस्वती सार्वदेशिक आर्य वीर दल, ठाकुर विक्रम सिंह जी, पण्डित रघुवीर जी वेदालंकार, श्री मुन्जाल जी आर्य, डॉ. धर्मेन्द्र जी, आचार्य धनंजय जी आदि अनेक आर्य नेताओं, विद्वानों व महात्माओं का आशीर्वाद प्राप्त हुआ।

आर्य कन्या महाविद्यालय उकलाना, हिसार (हरियाणा) में व्यक्तित्व विकास कार्यशाला सम्पन्न

छोटी-छोटी बातें जिदगी में साकारात्मक बदलाव ला सकती हैं – स्वामी आर्यवेश

हिसार : 28 नवम्बर 2022 को आर्य कन्या महाविद्यालय उकलाना में आयोजित व्यक्तित्व विकास कार्यशाला दूसरे सत्र के साथ सम्पन्न हुई। समापन अवसर पर सार्वदेशिक सभा के नेता आर्य संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी मुख्य अतिथि रहे व सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के प्रधान तेजस्वी युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी, सजग व यज्ञ हवन विश्व कल्याण के अध्यक्ष श्री सत्यपाल अग्रवाल, आर्य समाज हिसार के कोषाध्यक्ष श्री सत्य प्रकाश आर्य विशिष्ट अतिथि रहे।

इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश ने कार्यशाला में आकर्षक व्यक्तित्व की महत्ता एवं व्यक्तित्व विकास को लेकर छात्राओं को संबोधित करते हुए कहा कि आकर्षक व्यक्तित्व जीवन के हर क्षेत्र में अहम है। इससे जहां प्रोफेशनल जीवन में व्यक्ति को पहचान और महत्व मिलता है वहीं समाज में भी लोकप्रियता मिलती है। अच्छे संस्कार ही सर्वप्रथम व्यक्तित्व को निखारते हैं। संस्कार और व्यक्तित्व का एक दूसरे से संबंध है। उन्होंने छात्राओं को व्यक्तित्व विकास को लेकर कई टिप्स दिए। उन्होंने कहा कि जिन छोटी–छोटी बातों को हम नजरअंदाज कर देते हैं, वे हमारी जिदगी में साकारात्मक बदलाव ला सकते हैं। हमारी जीवन शैली कैसी है, हम कैसे बैठते हैं, कैसे चलते हैं। किसी से कैसे संवाद स्थापित करते हैं। हम कैसे कपड़े पहनते हैं ऐसी अनेक बातें हैं जिनका हमारे जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। अगर इन बातों पर ध्यान दिए बिना हम चल रहे हैं तो संभव है कि सफलता हमसे दूर हो जाए। उन्होंने छात्रों को बातचीत में शब्दों के सही उच्चारण का भी ध्यान देने का सुझाव दिया। स्वामी जी ने कहा कि मानवता को आप अपने जीवन का प्राथमिक अंग बनाएं।

यज्ञ हवन विश्व कल्याण के अध्यक्ष वास्तु प्लानर सत्य पाल अग्रवाल ने इस प्रकार की कार्यशालाओं व यज्ञ हवन को सार्थक बताते हुए महाविद्यालय में नियमित आयोजन करवाने का आह्वान किया।

इस अवसर पर महाविद्यालय की छात्राओं को शिक्षा व खेल में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने पर मैडल तथा प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया। महाविद्यालय के प्रधान सुगन चंद गोयल, उपप्रधान रोशन लाल मित्तल, सचिव रामकुमार गोयल ने सभी अतिथियों को स्मृति चिन्ह देकर कर सम्मानित किया। समापन अवसर पर महाविद्यालय की प्रिंसिपल कृष्णा गोयल, पदाधिकारी एवं स्टाफ सदस्य, आर्य समाज उकलाना प्रधान भोम सिंह आर्य, व्यापार मंडल प्रधान महेश बंसल, अग्रवाल सेवा सदन प्रधान राजेंद्र महिपाल, विनोद बंसल, सुनिल कुमार सहित अनेक गणमान्य लोग उपस्थित थे।

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान की अन्तरंग की बैठक सम्पन्न

आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान की अन्तरंग की एक आवश्यक बैठक दयानन्द बाल सदन में सभा प्रधान श्री बिरजानन्द एडवोकेट की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक में सभा की सभी गतिविधियों की समीक्षा करने के उपरान्त निर्णय किया गया कि सभा के तत्वावधान में संभागीय कार्यकर्ता सम्मेलन का आयोजन किया जायेगा। पहला कार्यकर्ता सम्मेलन 15 जनवरी, 2023 को जोधपुर में होगा जिसमें जैसलमेर, बाड़मेर, जालौर, सिरोही, पाली, जोधपुर तथा नागौर जिलों के कार्यकर्ता सम्मिलित होंगे। इसी प्रकार 18 फरवरी, 2023 को जयपुर संभाग की आर्य समाजों के कार्यकर्ता का सम्मेलन होगा जिसमें जयपुर के अतिरिक्त टोंक, सवाई माधोपुर, दौसा, सीकर, हनुमानगढ़, बीकानेर, गंगानगर आदि जिलों के कार्यकर्ता भाग लेंगे। अगला सम्मेलन मार्च, 2023 में भरतपुर संभाग का अलवर में होगा। जिसमें झुंझुनू, चुरू, अलवर, भरतपुर, करौली आदि जिलों के आर्य समाजों के कार्यकर्ता सम्मिलित होंगे। अप्रैल, 2023 में कोटा संभाग का कार्यकर्ता सम्मेलन होगा जिसमें कोटा के अतिरिक्त बारा, झालावाड़, धौलपुर, चित्तौगढ़, बूंदी आदि जिलों की आर्य समाजों के कार्यकर्ता भाग लेंगे।

इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी ने राजस्थान सभा के अन्तरंग सदस्यों को सम्बोधित करते हुए कहा कि पूरे राजस्थान में सभा की ओर से वेद प्रचार के कार्य को तीव्र गति से किया जाना चाहिए। वर्ष 2024 में महर्षि दयानन्द जी की दूसरी जन्मशती के अवसर पर राजस्थान के 32 जिलों में जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभाओं का गठन, आर्य वीरदल अथवा आर्य युवक परिषद् इकाईयों का निर्माण, जिला स्तर पर विचार गोष्ठियों एवं शोभा यात्राओं का आयोजन, एक लाख युवक एवं युवतियों को आर्य समाज का सदस्य बनाने तथा सप्तक्रांति के बिन्दुओं पर प्रदेश स्तरीय अभियान चलाना। सभा का भावी कार्यक्रम होना चाहिए। इस अवसर पर स्वामी जी ने राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत जी से अपील की कि वे महर्षि दयानन्द जी की दूसरी जन्मशती के अवसर पर अपनी सरकार की ओर से जोधपुर के हवाई अड्डे का नाम महर्षि दयानन्द अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा घोषित करें तथा महर्षि दयानन्द जी के जन्मदिन पर पूरे प्रदेश में अवकाश घोषित करें। इसी प्रकार जनोपयोगी अन्य कार्य भी महर्षि को समर्पित किये जायें। जिससे पूरे आर्य जगत में उत्साह की लहर आयेगी और आपको इसका श्रेय प्राप्त होगा।

सभा प्रधान श्री बिरजानन्द एडवोकेट ने आगामी महीनों में आयोजित होने वाले कार्यकर्ता सम्मेलनों की तैयारी के लिए एक उपसमिति गठित करने का सुझाव दिया और सभा प्रधान की अध्यक्षता में श्री कमलेश शर्मा मंत्री, श्री भंवर लाल आर्य अधिष्ठाता आर्य वीरदल, श्री दलपत सिंह आर्य–जालोर, श्री हरदेव सिंह आर्य–शिवगंज, श्री राजेन्द्र मुनि–कोटा, श्री भूपेन्द्र आर्य–भरतपुर, श्री धर्मवीर आर्य–बहरोड़, श्री धर्मपाल एडवोकेट–चिड़ावा, श्री रामचन्द्र एडवोकेट–खेतड़ी, श्री हवा सिंह आर्य एडवोकेट–राजगढ़, सभा कार्यकारी प्रधान श्री ओम प्रकाश वर्मा आदि के नाम सम्मिलित हैं।

अन्तरंग की कार्यवाही का संचालन सभा मंत्री श्री कमलेश शर्मा ने किया।

पृष्ठ 1 का शेष

दयानन्द बाल सदन, अजमेर में अमर शहीद राम प्रसाद बिस्मिल बलिदान दिवस समारोह का भव्य आयोजन

इस समारोह की शुरुआत प्रातः 8.30 देवयज्ञ एवं ब्रह्मयज्ञ के साथ हुई जिसके ब्रह्मा पं. वीर प्रभाकर शास्त्री थे। यज्ञ में मुख्य यजमान श्री राजेन्द्र कुमार आर्य, आचार्य सूर्य शास्त्री तथा प्रभू सिंह आर्य सपत्नीक एवं श्रीमती पुष्पा क्षेत्रपाल व डॉ. मनीषा शास्त्री रहे।

यज्ञ के पश्चात् आचार्य सूर्य प्रकाश शास्त्री ने ईश वन्दना प्रस्तुत की। बालक सोनू आर्य, बालिका ललिता आर्या, श्रीमती पुष्पा क्षेत्रपाल, डॉ. मनीषा शास्त्री आदि ने बहुत ही सुन्दर व मनमोहक भक्ति गीत प्रस्तुत किये। कार्यक्रम में उपस्थित स्वामी अग्निवेश योगाचार्य ने भी सम्बोधित किया।

कार्यक्रम के अवसर पर अजमेर के मालवीय कहे जाने वाले एवं आर्य समाज शिक्षा सभा की आर्य शिक्षण संस्थाओं सहित बाल सदन एवं आर्य समाज अजमेर के पूर्व प्रधान आदरणीय प्रो. दत्तात्रेय जी बावले तथा उनके अनुज भ्राता प्रो. कृष्णराव जी बावले की स्मृति में सन् 1895 में स्थापित दयानन्द बाल सदन अजमेर (पूर्व नाम श्रीमद्दयानन्द अनाथालय अजमेर) में नव–निर्मित बावले बन्धु अतिथि कक्ष का लोकार्पण स्वामी आर्यवेश जी के कर–कमलों से कराया गया। कार्यक्रम में पधारे समस्त अतिथियों, विद्वानों, विद्यार्थियों एवं सहयोगियों को प्रतीक चिन्ह एवं शॉल आदि भेंट कर सम्मानित किया गया। इसी प्रकार आर्य समाज दयानन्द बाल सदन की ओर से आर्य समाज की प्रधाना सुश्री सुरेन्द्रा कुमारी चौहान ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया। इस पूरे कार्यक्रम का संयोजन आर्य समाज दयानन्द बाल सदन अजमेर के मंत्री श्री राजेन्द्र कुमार आर्य ने किया। कार्यक्रम की व्यवस्था में श्री अशोक मेघवाल उपप्रधान, श्री सुरेन्द्र कुमार उपमंत्री, श्री आशीश शर्मा कोषाध्यक्ष, श्री अमर सिंह शास्त्री आर्य वीरदल अधिष्ठाता, श्री धन्नालाल शर्मा आय–व्यय निरीक्षक, श्री विजय सिंह आर्य मंत्री दयानन्द बाल सदन आदि का विशेष योगदान रहा। कार्यक्रम प्रीति भोज के साथ सम्पन्न हुआ।

सत्य में अगाध श्रद्धा के प्रतीक – श्रद्धानन्द

– डॉ. रामप्रकाश शर्मा 'सरस'

रविन्द्र नाथ टैगोर ने स्वामी श्रद्धानन्द जी का स्मरण इन शब्दों में किया– ''श्रद्धानन्द यह नाम ही उनकी सत्य में अगाध श्रद्धा का सूचक था। वे सदा श्रद्धावान रहे और श्रद्धा में ही आनन्दपूर्ण रहे। उनके लिए सत्य और जीवन एक ही सूत्र थे। उनका बलिदान उनके निर्भीक, अथक कार्यों के अमर चित्रों को आलोकित करता हुआ एक प्रकाश किरण की तरह हमारे सामने आता है।''

बरेली के मुंशीराम को सत्य के प्रचारक दयानन्द में, सत्य स्वरूप ईश्वर में, वेद तथा अधिकृत ग्रंथों में, संस्कृतज्ञों में घोर अश्रद्धा थी। अपने पिता के आदेश का अनिच्छा पूर्वक पालन करने के उद्देश्य मात्र से यह भटका हुआ चकाचौंध में चुन्धियाया हुआ युवक ऋषि के विषय में उस भाव को लेकर व्याख्यान कार्यक्रम में सम्मिलित हुआ था। युवक मुंशीराम को जिस–जिस में घोर अश्रद्धा थी व्याख्यानकर्ता ऋषि दयानन्द को उस उस में अपार श्रद्धा थी। ऋषि को ईश्वर और ईश्वरीय ज्ञान वेद तथा ऋषिकृत ग्रंथों के अतिरिक्त और किसी में रंच मात्र श्रद्धा नहीं थी मुंशीराम को ईश्वर, वेद और ऋषि ये सभी शब्द नये और बड़े ही हास्यास्पद लग रहे थे।

दयानन्द और मुंशीराम एक सागर के दो सुदूर तट थे। इन तटों के मध्य प्रवाहमान अनेक अकाट्य तर्क एवं प्रश्न थे, जिनमें से कुछ को सिद्ध कर पाने का कोई उपाय नहीं था। ईश्वर विषयक प्रश्नों के तार्किक उत्तरों से ऋषि दयानन्द ने मुंशीराम को अवाक् तो कर दिया लेकिन हृदय से मुंशीराम फिर भी ईश्वरीय सत्ता को स्वीकार करने की स्थिति से कोसों दूर थे। महर्षि ने एक अद्भूत वाक्य मुंशीराम से कहा– 'मुंशीराम ईश्वर की कृपा से ही तुम्हें ईश्वर पर विश्वास होगा, जिस पर तुम्हें अब तक विश्वास नहीं हुआ है उस पर मुझे अटूट विश्वास है वह तुम्हें भी अपने विश्वास का पात्र शीघ्र ही बनाएगा।''

ऋषि दयानन्द और मुंशीराम के मध्य प्रश्नोत्तर की वह अमृतमयी बेला कैसी रही होगी? तर्क कर्ता युवक पर ऋषि ने अपनी कितनी करूणा बरसाई होगी? वह युवक, वह व्याख्यान सभा स्थली, युवक की जिज्ञासा, जिज्ञासा भरी प्रश्नावली, प्रश्नों के उत्तरों में ज्ञान और करूणा के कोष से मुंशीराम पर लुटाई निधिद्वे की पावन घड़ियां ये सब कितना परम धन्यता पूर्ण समय रहा होगा। यह सद्पात्र हृदय ही अपने–अपने चिंतन के कल्पना सिंधु में डुबकियाँ लगाकर उस अमृत बेला का सुखद अनुभव हृदय स्तर पर कर सकते हैं। बालक मूलशंकर भी नास्तिकता को जन्म देने वाली विषम परिस्थितियों से परम आस्तिक बनें। (इस सम्बंध में जिज्ञासु पाठक लेखक का 'बोध रात्रि का आध्यात्मिक विज्ञान' शीर्षक लेख ऋषि बोध विशेषांक 'टंकारा समाचार' वर्ष–2009 का अध्ययन कर सकते हैं।)

मुंशीराम घोर नास्तिकता से परम आस्तिकता की दिशा में अंतर्यात्रा तो पारसमणि दयानन्द का स्पर्श एवं दर्शन का सौभाग्य प्राप्त करने के समय ही कर चुके थे। इस कारण उनके जीवन में वह परिवर्तन होना अवश्यम्भावी हो गया था। जो ऋषि, संतों के सानिध्य में आने से होता है। डाकू रत्नाकर तपस्वी साधुओं के क्षणिक संसर्ग मात्र से ही श्रीराम के पावन जीवन चरित्र का गायक आदि कवि के नाम से विश्व प्रसिद्ध हुआ। अंगुलीमाल भगवान बुद्ध के साथ स्वल्प बात–चीत करने भर से वैराग्य प्राप्त बौद्ध भिक्षु बन गया। अमीचन्द जैसे न जाने कितने पतित जीवन ऋषि दयानन्द की चरण रज के स्पर्श से अनुकरणीय बन गये। भारत के इतिहास से ऐसे अनेक उदाहरण गिनाए जा सकते हैं कि संत पुरूषों के सानिध्य में तिरस्कृत जीवन सत्कार योग्य बने हैं।

ऋषि दयानन्द के हृदय से मुंशीराम के लिए निकला दिव्य वाक्य समय आने पर सत्य अर्थ में प्रतिफलित हुआ और ईश्वर की कृपा मुंशीराम पर हुई, जिससे मुंशीराम की अश्रद्धा श्रद्धा में रूपांतरित हुई। ईश्वरीय सत्ता के प्रति मुंशीराम का घोर अविश्वास अति विश्वास में परिवर्तित हुआ। जीवन की दशा और दिशा दोनों ने ऐसा अप्रत्याशित मोड़ लिया कि जीवन से सहस्त्रों फूलों की सुगंध एक साथ चारों ओर फैलने लगी। मुंशीराम से 'महात्मा मुंशीराम' बन गए। यश कीर्ति से अभिभूत

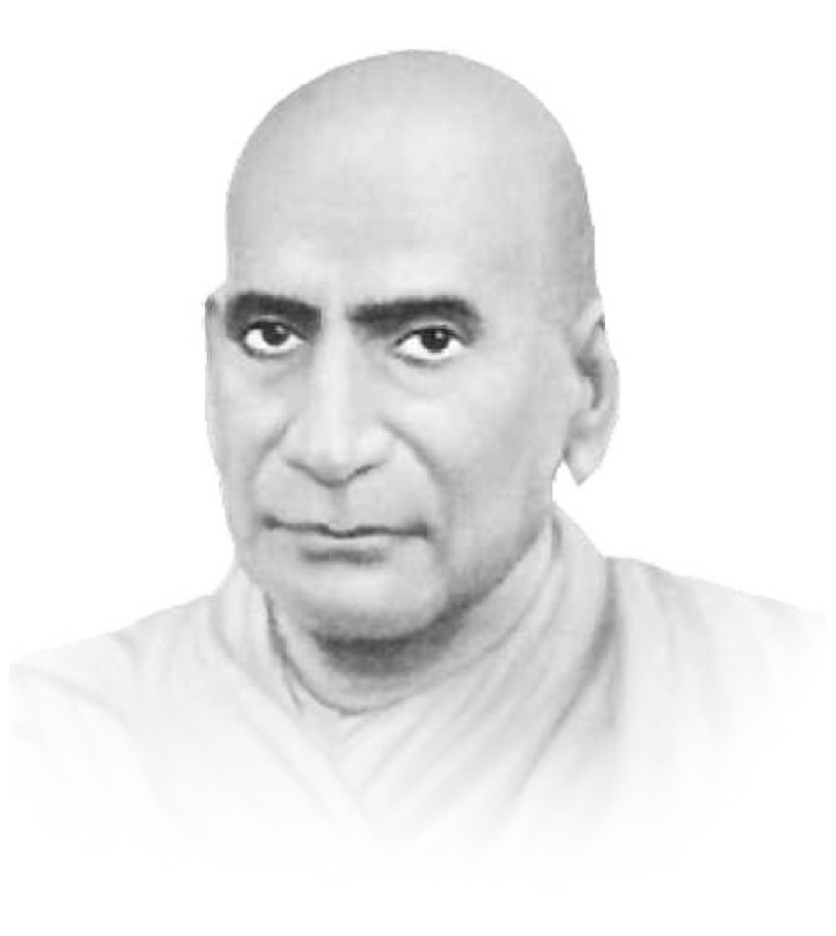

भारतीय जनमानस ने कोटि–कोटि बन्दनीय महात्मा मुंशीराम को अपना पथ दृष्टा बना लिया। इतिहास में मुंशीराम जैसे विरले पुरुष हुए हैं जिन्होंने अपरिमित साहस के साथ सत्य की अग्नि में श्रद्धा सहित आत्माहुति दी। इस महातपस्वी के दिव्य अभिषेक की तैयारी में ईश्वरीय सत्ता विविध खेल, खेल रही थी। एकाएक इस खेल के कई भाग एक के बाद एक मानव हृदय को रोमांचित कर देने वाले सामने आने लगे। प्रथम आहुति के रूप में अपना जीवन गुरुकुलीय शिक्षा के लिए समर्पित कर दिया। अपने पुत्रों को गुरुकुल शिक्षा हेतु प्रथम विद्यार्थी के रूप में सौंप दिया। अपनी सम्पत्ति गुरुकुल शिक्षा पद्धति के स्वप्न को साकार रूप देने के उद्देश्य से न्यौछावर कर दी।

ईश्वर, वेद और मानवता, ईश्वर में श्रद्धा, वेद का प्रचार–प्रसार मानव मात्र का कल्याण यही इनके जीवन के तीन ध्येय बन गए। भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने कहा था 'स्वामी श्रद्धानन्द ने जिस निष्ठा, प्रेम और दृढ़ता से जीवन भर अपने धर्म को निभाया, वह हम सबके लिए प्रेरणास्पद रहेगा।' पहले महात्मा मुंशीराम के रूप में और संन्यासी हो जाने पर स्वामी श्रद्धानन्द के रूप में उन्होंने विश्व विख्यात कीर्ति अर्जित की बहुत से लोगों को ये भ्रम है कि महात्मा मुंशीराम और श्रद्धानन्द दो अलग–अलग व्यक्तित्व हैं। सम्भवतः दुनिया में केवल एक ही व्यक्ति ऐसा हुआ है जिसके जीवन के दोनों व्यक्तित्व विश्व प्रसिद्ध हुए।

सत्य, श्रद्धा, साहस, समर्पण, स्वराष्ट्र प्रेम, संस्कार, संस्कृति, सहजता आदि के दर्शन जिसे इन समस्त सात्विक सकारात्मक गुण समूह को किसी एक मानव में एक साथ देखने की इच्छा हो तो वह स्वामी श्रद्धानन्द के पावन, प्रेरक जीवन का अध्ययन कर सकता है। इन समस्त सद्गुणों का समावेश तात्कालिक परिस्थितियों के कारण प्रकृति की ओर से प्रदत्त सौगात स्वरूप था। प्रसिद्ध समाज शास्त्री आरनॉल्ड तोयनबी का कथन है कि समाज में जब कोई असाधारण परिस्थिति उत्पन्न हो जाती है तब व्यक्ति तथा समाज के लिए चुनौती चैलेंज का रूप धारण कर लेती है। तब वह परिस्थिति व्यक्ति तथा समाज को ललकारती है, और पूछती है कि है कोई माई का लाल जो इस असाधारण परिस्थिति का, इस ललकार का, इस चैलेंज का मर्द होकर सामना कर सके, जो इसका जवाब दे सके? तब जो जवाब देने के लिए खड़े हो जाते हैं वह समाज के नेता कहलाते हैं। स्वामी श्रद्धानन्द जी अंग्रेज पुलिस की संगीनों के सामने अपनी छाती खोलकर दिल्ली के चांदनी चौक में खड़े हो गये थे और कहा– 'साहस है तो लो चलाओ गोली।'

25 दिसम्बर की तारीख भारत के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में अंकित हैं। इस दिन भारत माता के वीर सपूत स्वामी श्रद्धानन्द ने अपने रक्त से अपनी भारत माता के चरणों का अंतिम स्पर्श किया था। इसी कारण यह दिन बड़ा दिन कहलाता है। बड़े दिन के विषय में पश्चिम से आई कहानी तो केवल कहानी भर है। श्रद्धानन्द बलिदान आर्य जाति (सनातन संस्कृति) की रक्षा के लिए हुआ था। इस दिन को इस रूप में मनाया जाए कि प्रत्येक आर्य गर्व का अनुभव करें कि स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान सनातन संस्कृति की रखा एवं भलाई के लिए हुआ।

– एम.ए. हिंदी संस्कृत,
आचार्य, बी.एड. पी.एच.डी.
पता– बी– 208, ग्रीन यू
हाईट्स राजनगर एक्सटेशन
गाजियाबाद–201017
मो०– 9810796203

सार्वदेशिक सभा द्वारा चारों दर्शनों एवं संस्कार विधि का पुनर्प्रकाशन

भाष्यकार तर्क शिरोमणि – स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती

1. वेदान्त दर्शन – पृष्ठ 232 – मूल्य 100 रुपये
2. वैशेषिक दर्शन – पृष्ठ 248 – मूल्य 100 रुपये
3. न्याय दर्शन – पृष्ठ 240 – मूल्य 100 रुपये
4. सांख्य दर्शन – पृष्ठ 156 – मूल्य 80 रुपये
5. संस्कार विधि – पृष्ठ 278 – मूल्य 90 रुपये

बढ़िया कागज, सुन्दर प्रिंटिंग व आकर्षक टाइटल के साथ 25 प्रतिशत छूट पर सभा कार्यालय में उपलब्ध है।

प्रकाशक : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

''दयानन्द भवन'' 3/5, आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2

दूरभाष :– 011–42415359, 23274771

स्वामी आर्यवेश जी अपने सहयोगियों सहित पहुंचे महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति न्यास भिनाय कोठी, अजमेर

महर्षि दयानन्द न्यास भिनाय कोठी, अजमेर के कार्यकारी प्रधान डॉ. गोपाल बाहेती पूर्व विधायक के आमंत्रण पर स्वामी आर्यवेश जी व उनके सभी सहयोगी सायं 5 बजे भिनाय कोठी पहुंचे और सायंकाल के दैनिक यज्ञ में भाग लिया।

यज्ञ के उपरान्त स्वामी आर्यवेश जी ने अपने संक्षिप्त उद्बोधन में महर्षि दयानन्द सरस्वती के अन्तिम समय को स्मरण करते हुए कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती के देदिप्यमान व्यक्तित्व से पं. गुरुदत्त विद्यार्थी जैसा एक प्रतिभा सम्पन्न युवा वैज्ञानिक नास्तिक से आस्तिक बना था। आज उसी भिनाय कोठी में आकर हम सब लोग अभिभूत हैं और महर्षि के मिशन को और अधिक तेजस्विता के साथ आगे बढ़ाने का संकल्प लेते हैं। स्वामी जी ने महर्षि दयानन्द स्मृति भिनाय कोठी, अजमेर को एक भव्य स्मारक के रूप में विकसित करने के लिए पूरे आर्य जगत का आह्वान किया और उन्होंने कहा कि इस स्मारक में महर्षि दयानन्द के जीवन की झांकी प्रस्तुत करने की व्यवस्था की जाये और साथ ही उनके सम्पूर्ण साहित्य को भी अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाने की सुन्दर व्यवस्था की जाये।

डॉ. गोपाल बाहेती जी ने न्यास की ओर से स्वामी आर्यवेश जी तथा उनके समस्त सहयोगियों का ओ३म् पट्ट व नये वर्ष का कलेण्डर भेंट कर स्वागत किया तथा जलपान की व्यवस्था भी की। स्वामी जी के साथ राजस्थान सभा के प्रधान श्री बिरजानन्द जी एडवोकेट, उपप्रधान सर नारायण सिंह आर्य जी, मंत्री श्री कमलेश शर्मा जी, श्री भंवर लाल आर्य जी, श्री जितेन्द्र सिंह आर्य जी, श्री भंवरलाल हठवाल एवं श्री उम्मेद सिंह आर्य आदि सभी उपस्थित थे। सार्वदेशिक सभा के पुस्तक विभाग के व्यवस्थापक श्री धर्मेन्द्र कुमार जी भी स्वामी जी के साथ सभी कार्यक्रमों में निरन्तर सहयोगी के रूप में रहे।

मानवीय निर्माण मंच दिल्ली के तत्वावधान में राज्य स्तरीय योगासन एवं दौड़ प्रतियोगिता सम्पन्न
योग हमारी प्राचीन धरोहर है –स्वामी आर्यवेश
योग हमें जोड़ने की प्रेरणा देता हैं– तीरथ सिंह रावत

मानवीय निर्माण मंच दिल्ली के तत्वावधान में दरियापुर गांव के दादा मालदेव खेल परिसर में 17 व 18 दिसंबर, 2022 तक दो दिवसीय चल रहे दिल्ली राज्य स्तरीय योगासन एवं दौड़ प्रतियोगिता का शुभारंभ 17 दिसंबर को किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि उत्तराखंड सरकार के पूर्व मुख्यमंत्री एवं सांसद श्री तीरथ सिंह रावत जी पधारे। श्री रावत जी ने दरियापुर गांव वासियों का इस कार्यक्रम में उन्हें आमंत्रित करने के लिए आभार प्रकट किया और कहा कि योग हमें जोड़ने की प्रेरणा देता है और योग के यम नियम को जीवन में धारण करें प्रत्येक खिलाड़ी।

कार्यक्रम की अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नेता स्वामी आर्यवेश जी ने ऑन लाईन के माध्यम से जुड़े। स्वामी जी ने बताया कि योग हमारी प्राचीन धरोहर है। इसे संभाल कर रखना हमारी जिम्मेदारी है। संस्था के महासचिव एवं कार्यक्रम के संयोजक उत्तम आर्य ने बताया कि प्रतियोगिता में दिल्ली के 500 खिलाड़ियों ने योगासन एवं 300 खिलाड़ियों ने दौड़ प्रतियोगिता में हिस्सा लिया। प्रतियोगिता का समापन समारोह 18 दिसंबर को पुरस्कार वितरण से क्षेत्रीय ए.सी.पी. मोहित लाडला जी एवं ए.बी.वी.पी. के प्रांतीय प्रभारी द्वारा किया गया। प्रतियोगिता में देहात के 105 से अधिक बच्चों ने पदक हासिल किए, जिसमें दरियापुर के पुष्कर सहरावत, नैतिक सहरावत व रक्षित ने अपने–अपने आयु वर्ग में स्वर्ण पदक हासिल किया। प्रतियोगिता के समापन पर टी.पी.डी.डी.एल. ने बच्चों को ट्रैक शूट देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में निगम पार्षद बबिता, दीपक डबास, सुप्रीम कोर्ट से वरिष्ठ वकील हिमांशु सागर जी, रविन्द्र इंद्राज सिंह, अनिल सहरावत, चेयरमैन रवि सहरावत, चेयरमैन अरुण ठाकरान, बलराम आर्य, जोगेंद्र सहरावत, जयभगवान, रविन्द्र सहरावत, साहिल गहलोत, पुष्कर सहरावत, दीपिका ठाकरान अन्य ग्रामवासी मौजूद रहे। कार्यक्रम भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ।

वैदिक सार्वदेशिक के सदस्यों से निवेदन

वैदिक सार्वदेशिक पत्रिका के उन ग्राहकों से विनम्र निवेदन है जिनका वार्षिक शुल्क समाप्त हो चुका है। वे शीघ्र अपना वार्षिक शुल्क 250/- रुपये सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय में भिजवाने की व्यवस्था करें, अन्यथा भविष्य में उन्हें नियमित रूप से पत्रिका भेज पाना सम्भव नहीं हो सकेगा, और उनका नाम ग्राहक सूची से हटा दिया जायेगा। वैदिक सार्वदेशिक का वार्षिक शुल्क 250/- रुपये एवं आजीवन शुल्क 2500/- रुपये है। जो महानुभाव इस पत्रिका को मंगाना चाहें वह उपरोक्त राशि चैक/ड्राफ्ट अथवा धनादेश द्वारा ''सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'' के नाम से सभा कार्यालय ''महर्षि दयानन्द भवन'' 3/5, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2 के पते पर भेजें। देश-विदेश में हजारों की संख्या में भेजे जाने वाले वैदिक सार्वदेशिक को प्रति सप्ताह अपने घर पर प्राप्त करने के लिए शीघ्र सम्पर्क करें।

-व्यवस्थापक, वैदिक सार्वदेशिक

आर्य समाज के छठे नियम की व्याख्या

'संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।'

व्याख्या :– इस समाज का मुख्य उद्देश्य है इस जगत जिसमें हम निवास करते हैं, का उपकार करना है।

संसार में रहकर हमें सांसारिक तो बने रहना है किन्तु हम अध्यात्म की गरिमा को सुरक्षित रखते हुए अपने जीवन की गाड़ी निर्वाध चलाएं। यही अपेक्षित है। उपकार कई प्रकार से किया जा सकता है। जो जीवन से हार चुके हैं उन्हें हम जीना सिखाएं। वह व्यक्ति जो हमारी संगति में होगा तो वह अविद्या और अपसंस्कृति को मिटाने वाला हमारी उर्वर सोच होगी। यही सोच वास्तविक रूप से जीना सिखाती है। हम ऐसे भीरू व्यक्तियों को शारीरिक रूप से सबल बना सकते हैं। शारीरिक क्षमता तभी हो सकेगी जब वह शरीर निरोग हो। स्वस्थ और निरोगी शरीर में आत्मा का निवास बहुत उत्तम दर्शनीय होगा। आत्मा सबल होती हुई चली जायेगी। महात्मा कौन होता है वही तो होता है जो उत्तम आत्मिक प्रतिभा जीवन में धारण किये हुए होंगे। आत्मिक सौंदर्य से मंडित उत्तम मनुष्य अपने जीवन व्यवहार की छाप से दूसरों को अच्छा मार्ग मिलेगा। व्यक्ति नित–नित संध्या हवन करेगा और अपना जीवन यज्ञीय बना लेगा। ये इस समाज की मर्यादा के सोपान हैं। अच्छी आदतें प्रकृति की देन हैं और प्रकृति को सदैव मुक्त और शुद्ध–बुद्ध रखेगा। ऐसा व्यक्ति मर्यादित होगा। समाज में उसका मान–सम्मान होगा यानि अमुक व्यक्ति का सामाजिक जीवन लेन–देन व्यवहार के अन्तर्गत उत्तम सामाजिकता का आचरणवान होगा।

देश समाज में हर व्यक्ति का योगदान होना चाहिए और समाज का भी दायित्व है कि वह समाज से लाभान्वित हो।

वस्तुतः उन्नयन के लिए राज कर्मचारी भी प्रशासकों से मर्यादित हो नियम भंग करने में उच्छृंखलता हो तो दंड विधान है।

सामज में फैली कुरीतियों के विनाश में वैज्ञानिक दृष्टिकोण होना आवश्यक है। अध्यात्म और विज्ञान की सम्पूर्णता उत्पन्न करते हैं।

हर व्यक्ति की चारित्रिक श्रेष्ठता ही जीवन को स्पन्दित करती है। व्यक्तियों के समूह को शिक्षा और विद्या सीखनी चाहिए तभी तो ऊँची संस्कृति बनती ह। संस्कृति के निखार से सभ्यता का श्रेष्ठ सृजन होता है।

शिक्षालयों में छात्र–छात्राओं को वीर्य की महत्ता बतानी चाहिए। यह सूत्र – 'मरणं बिन्दूपातेन' अर्थात् वीर्य पतन का नाम मृत्यु है। 'ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युपाध्नते।' गुरुकुलों में आचार्यों द्वारा विद्यार्थियों को उनकी प्रथम प्रविष्टि पर सन्देश दिया जाता है। 'मनसा वाचा कर्मणा' का छात्र–छात्राओं को संकल्प कराया जाता है। यह संस्कारों की संस्कृति उल्लास जगाती है। उन्हीं संस्कारों को रचा–पचा कर जीवन में अनेक जीवन में अनेक विद्याओं के अभियान प्रारम्भ होते हैं। यही वैदिक संस्कृति है जो वेदों में प्रस्यूत है।

त्रिर्वतियातं त्रिरअनुप्रते जनेत्रिः सुप्राव्ये त्रेघेव शिक्षतम्।
त्रिर्नान्द्यं वहतमश्विना युवं त्रिः प्रक्षो अस्मे अक्षरेव पिन्वतम्।। ऋ. मं. । सू. 34

पदार्थ – हे (अश्विना) विद्या देने वा ग्रहण करने वाले विद्वान् मनुष्यों! (युवम्) तुम दोनों (अस्मे) हम लोगों के (वर्तिः) (त्रिः) तीन बार (यातम्) प्राप्त हुआ करो तथा (सुप्राव्ये) अच्छे प्रकार प्रवेश करने योग्य (अनुव्रते) जिसके अनुकूल सत्याचरण व्रत है उस (जने) बुद्धि के उत्पादन करने वाले मनुष्य के निमित्त (त्रि) तीन बार (यातम्) प्राप्त कीजिए (अस्मे) हम लोगों को (शिक्षतम्) शिक्षा और (नान्द्यम्) समृद्धि होने योग्य शिल्प ज्ञान को (त्रिः) तीन बार (वहतम्) प्राप्त करो और (अक्षरेव) जैसे नदी ताल समुद्र और सकास जल से प्राप्त होते हैं, वैसे हम लोगों को (वृक्षः) विद्या सम्पर्क को (त्रिः) तीन बार (पिन्वतम्) प्राप्त करो।

भावार्थ :– शिल्प विद्या के जानने वाले मनुष्यों को योग्य है कि इच्छा करने वाले अनुकूल बुद्धिमान को पदार्थ विद्या पढ़ा और उत्तम–उत्तम शिक्षा बार–बार देकर कार्यों को सिद्ध करने में समर्थ करें और उनको भी चाहिए कि इस विद्या को सम्पादित करके यथावत् चतुराई और पुरुषार्थ से सुखों के उपकारों को ग्रहण करें।

आर्य समाज एक सर्वश्रेष्ठ मानक प्राप्त संगठन है जिसका कोई जवाब नहीं। यज्ञ में सभी सुख विद्यमान है। स्वामी दयानन्द सरस्वती की उत्कृष्ट अवधारणा से यदि हम अपने आपको आर्य बना लें तो हम फिर अन्य सज्जनों को भी आहूत कर सकते हैं। आर्य समाज के दसों नियमों में हीरे हार जैसी उत्कृष्टता या चमक लिये हम सबके हृदयों को जीत लेंगे। यह निश्चिय है। वर्तमान दौर में हॉफ रहे, अधोगति में पड़े अवैदिक तंत्रों में जकड़े हुए ढोंगी बाबाओं से निजात पायें। हमारा वेद प्रचार इतना समर्थ हो कि हम दूसरों को अपने आर्य समाज के दस नियमों को उनके हृदयों में अनुकरणीय सत्य उतार कर आश्वस्त करें। संसार को सही मार्ग दिखाते हुए हम बेहतरीन उपकार कर सकते हैं। आओ इस पवित्र हीरे की परख कराते हुए सबको शारीरिक, मानसिक और सामाजिक उनयन का पथ अग्रसारित करें।

''शरीर आत्मा मन प्रबुद्ध संकल्पित हों,
संगच्छध्वम् संवदध्वम् को विस्तारें।
मनुज वही जो अच्छा–सच्चा स्वस्थ विचारे
जीवन में सुखन्ती कैसे चलें विचारें।
उपकारित हो सारा जग जिसमें रहते हम,
साफ–स्वचदता से शोभित पूरित आशाएँ।
रहें प्रकाशित वेद मंत्र के विविध ज्ञान से,
चमका दें हम आलोकि हों सभी दिशाएँ।
सभी इन्द्रियाँ निर्दोषित यशवन्ती होवें,
सदा स्वच्छता के हामी हम पृथुलवान हों।
इतना अच्छा सरल ज्ञान–विज्ञान वरण कर,
सारे जीवन में जीवनभर कृतुभवान् हों।

उप संहार करते हुए हम कह सकते हैं कि सकारात्मक दृष्टिकोण तन–मन–आत्मा के सच्चे स्वरूप को सजाता रहेगा और जीवन में निखार आता रहेगा। इसके लिए योग के अन्तर्गत मनुष्य होने का पूर्ण विकास और आनन्द प्राप्त रहेगा।

– बाबूराम शर्मा 'विभाकर'
52/2 लाल क्वार्टस, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश
मो.:– 9350451497

पंजीयन संख्या (R.N.I. No.)- DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/2021-23
Licence to Post without prepayment of Postage. U (c)-289/2021-23

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य समाज के त्यागी, तपस्वी एवं तेजस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें :- www.facebook.com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें तथा अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई–मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

पद्मिनी आर्ष कन्या गुरुकुल चित्तौड़गढ़ (राजस्थान) में 10 से 18 दिसम्बर, 2022 तक वेद पारायण यज्ञ का विशाल आयोजन हुआ सम्पन्न

20 हजार वेद मंत्रों से दी गई आहुतियाँ

आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान् डॉ. सोमदेव शास्त्री के दृढ़ संकल्प से

39वें वेद पारायण यज्ञ में युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी रहे विशिष्ट अतिथि

यज्ञ के पौरोहित्य का दायित्व गुरुकुल के मुख्य स्तम्भ श्री जीववर्द्धन शास्त्री ने संभाला

राजस्थान के ऐतिहासिक नगर चित्तौड़गढ़ में स्थित पद्मिनी आर्ष कन्या गुरुकुल की भव्य यज्ञशाला में आर्य जगत् के लब्ध प्रतिष्ठित विद्वान् डॉ. सोमदेव शास्त्री जी के यजमानत्व में वेद पारायण यज्ञ का भव्य कार्यक्रम दिनांक 10 से 18 दिसम्बर, 2022 तक आयोजित किया गया। यज्ञ में 20 हजार वेद मंत्रों से आहुतियाँ प्रदान की गई। जिसमें 120 किलो देशी घी, 150 किलो हमन सामग्री, 40 किलो नारियल गोला तथा गुग्गुल, कपूर, काचरी, जायफल, लौंग, नागकेस, जावित्री, इलायची, डोडा बीज, मुनक्का, छुआरा, अंजीर, खुरमानी, अखरोट, बादाम आदि औषधियों एवं मेवे डाले गये। इसी प्रकार आम, पीपल, बड़, ढाक (पलाश) आदि 500 किलो समिधाओं का प्रयोग किया गया। यज्ञ का कार्यक्रम प्रातः 8 से 12 बजे तक तथा सायंकाल 2 से 6 बजे तक निरन्तर 8 घण्टे प्रतिदिन चला जिसमें समय–समय पर विद्वानों के प्रवचन एवं भजन आदि भी होते रहे। यज्ञ के मुख्य यजमान डॉ. सोमदेव शास्त्री व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सुदक्षिणा शास्त्री के दृढ़ संकल्प से यह 39वाँ वेद पारायण यज्ञ किया गया।

यज्ञ के अन्तिम तीन दिनों में आर्य जगत् के तेजस्वी युवा

संन्यासी मिशन आर्यावर्त चैनल के निदेशक, गुरुकुल धीरणवास के अध्यक्ष और गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ मैनेजमेंट कमेटी के मंत्री स्वामी आदित्यवेश जी विशिष्ट अतिथि के रूप में सम्मिलित हुए। उनके साथ युवा संन्यासी स्वामी मुक्तिवेश जी, हरियाणा अध्यापक संघ के नेता श्री अशोक आर्य जी, आर्य युवक परिषद् हरियाणा के मंत्री श्री ऋषिराज शास्त्री जी भी कार्यक्रम में सम्मिलित हुए।

इस अवसर पर अपने प्रवचनों में स्वामी आदित्यवेश जी ने जहाँ यज्ञ के महत्व पर विस्तार से प्रकाश डाला वहीं उन्होंने वेद को मानव मात्र के कल्याण के लिए उपयोगी ज्ञान बताया। उन्होंने कहा कि सृष्टि के प्रारम्भ में परमपिता परमात्मा ने सभी मनुष्यों के लिए वेद का ज्ञान चार ऋषियों के हृदय में प्रदत्त किया और उन ऋषियों ने उस ज्ञान को अन्य लोगों में सुनाकर प्रसारित किया। इसीलिए वेद ज्ञान को श्रुति ज्ञान भी कहा जाता है। स्वामी आदित्यवेश जी ने यज्ञ को परोपकार की संज्ञा दी और उन्होंने कहा कि मनुष्य जीवन की प्रासंगिकता एवं सार्थकता निष्काम कर्म एवं परोपकार में निहित है। यज्ञ मनुष्य को परोपकार करने की प्रेरणा देता है। देव यज्ञ से जहाँ पर्यावरण शुद्ध होता है वहीं इससे आत्मा की उन्नति भी होती है। स्वामी जी ने आचार्य सोमदेव जी के इस पवित्र तथा महान् संकल्प को सभी लोगों के लिए प्रेरणा देने वाला एक उदाहरण बताया। उन्होंने कहा कि आचार्य जी एक त्यागी, तपस्वी, विद्वान् एवं समर्पित व्यक्तित्व के धनी हैं। उन्होंने लगभग 39 वेद पारायण अभी तक सम्पन्न कर लिये हैं जो उनकी यज्ञ के प्रति निष्ठा का एक अप्रतिम उदाहरण है। स्वामी आदित्यवेश जी ने कन्या गुरुकुल की प्रगति और पढ़ने वाली कन्याओं की प्रतिभा के लिए आचार्य जी को हृदय से साधुवाद दिया।

विदित हो कि डॉ. सोमदेव शास्त्री पिछले कोरोना काल से बन्द पड़े पद्मिनी आर्ष कन्या गुरुकुल चित्तौड़गढ़ को पुनर्जीवित कर निरन्तर प्रगति पथ पर अग्रसर कर रहे हैं। उन्होंने अपना शेष जीवन इस कन्या गुरुकुल की उन्नति तथा समृद्धि के लिए समर्पित करने का संकल्प लिया हुआ है। ऐसे विद्वान् पर पूरे आर्य जगत् को गर्व है। यज्ञ में कई आर्य समाजों के अधिकारी एवं कार्यकर्ता दल–बल एवं उत्साह के साथ सम्मिलित हुए। आचार्य जी ने कई कार्यकर्ताओं को सम्मानित भी किया। डॉ. सोमदेव जी ने घोषणा की कि अगला 40वाँ यज्ञ वे अपने पैतृक गांव–नौनेरा, निकट पिपल्या मण्डी, मध्य प्रदेश में 29 से 31 जनवरी, 2023 को करेंगे जिसमें कई शीर्षस्थ संन्यासी, विद्वान्, भजनोपदेशक एवं वेद पाठी भी आमंत्रित किये जायेंगे। 18 दिसम्बर, 2022 को यज्ञ की पूर्णाहुति के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। डॉ. सोमदेव जी ने सभी आगन्तुक महानुभावों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

आर्य समाज एवं आर्य विचारों के शुभचिन्तक आदरणीय श्री जगदीश मदान जी का 'वैदिक सार्वदेशिक' साप्ताहिक पत्रिका के लिए अनुकरणीय सहयोग

आर्य समाज एवं आर्य विचारों के लिए सर्वात्मना समर्पित श्री जगदीश मदान जी हरियाणा प्रान्त के जगाधारी, जिला–यमुनानगर के निवासी हैं। आज उनकी आयु लगभग 75 वर्ष से अधिक है, परन्तु इस उम्र में भी उनके अन्दर स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के विचारों को जन–जन तक पहुँचाने के लिए ललक बनी रहती है। इसके लिए वह आर्य समाज की अनेक पत्र–पत्रिकाओं के लिए नये–नये ग्राहक बनाकर उन्हें वैदिक साहित्य एवं आर्य समाज के विचारों को पढ़ने के लिए प्रेरित करके महर्षि दयानन्द एवं आर्य समाज के मिशन से जोड़ने का प्रयास करते रहते हैं। इसी श्रृंखला में उन्होंने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "महर्षि दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002 के मुख पत्र 'वैदिक सार्वदेशिक' साप्ताहिक पत्रिका के लिए लगभग 100 से अधिक नये सदस्यों को बनाकर एक अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया है। ऐसे कर्मठ आर्य महानुभाव के इन समाजसेवी कार्यों से अन्य आर्यजनों एवं प्रचारकों को प्रेरणा लेनी चाहिए और आर्य समाज तथा स्वामी दयानन्द जी के विचारों को जन–जन तक पहुँचाने के लिए अपना अमूल्य सहयोग देना चाहिए। हम सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से श्री मदान जी के उत्तम स्वास्थ्य तथा दीर्घायुष्य की कामना करते हैं, और आशा करते हैं कि वे इसी प्रकार से शतायु होने तक समाजसेवा के कार्य करते हुए वैदिक संस्कृति के प्रचार–प्रसार में अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

— सम्पादक

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (दूरभाष : 011-23274771)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।